अल्लाह कौन है?

من هو الله؟

< باللغة الهندية >

साइट नोविंग अल्लाह (अल्लाह का परिचय)

موقع معرفة الله

संशोधन व शुद्धिकरण : अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह

مراجعة وتصحيح: عطاء الرحمن ضياء الله

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मैं अति मेहरबान और दयालु अल्लाह के नाम से आरम्भ करता हूँ।

إن الحمد لله نحمده ونستعينه ونستغفره، ونعوذ بالله من شرور أنفسنا، وسيئات أعمالنا، من يهده الله فلا مضل له، ومن يضلل فلا هادي له، وبعد:

हर प्रकार की हम्द व सना (प्रशंसा और गुणगान) केवल अल्लाह के लिए योग्य है, हम उसी की प्रशंसा करते हैं, उसी से मदद मांगते और उसी से क्षमा याचना करते हैं, तथा हम अपने नफ्स की बुराई और अपने बुरे कामों से अल्लाह की पनाह में आते हैं, जिसे अल्लाह हिदायत प्रदान कर दे उसे कोई पथभ्रष्ट (गुमराह) करनेवाला नहीं, और जिसे गुमराह कर दे उसे कोई हिदायत देनेवाला नहीं। हम्द व सना के बाद :

अल्लाह कौन है?

शब्द-साधन :

महिमावान "अल्लाह" के नाम का शब्द अरबी मूल का है। इस्लाम से पहले अरबों ने इस नाम का प्रयोग किया है। अल्लाह सर्वशक्तिमान सर्वोच्च पूज्य है जिसका कोई साझी नहीं। जिस पर, इस्लाम से पूर्व अज्ञानता की अवधि में अरब लोग ईमान रखते थे, लेकिन उनमें से कुछ लोगों ने उसके साथ अन्य देवताओं की भी पूजा की जबकि कुछ दूसरे लोगों ने उसकी उपासना में मूर्तियों को भी साझी ठहराया।

अल्लाह का अस्तित्व और उसकी विशेषताएँ

(विश्वासियों और नास्तिकों समेत) सभी लोगों के बीच इस बात पर सहमत होना संभव है कि अल्लाह के अस्तित्व और उसकी विशेषताओं की सच्चाई तक पहुंचने के लिए एक मात्र रास्ता शुद्ध वैज्ञानिक तर्क होना चाहिए। क्योंकि इस बात से हर कोई सहमत है कि हर काम का कोई न कोई करनेवाला होता है और हर चीज़ के लिए कोई न कोई कारण होता है। इस से कोई चीज़ बाहर नहीं है। चुनाँचे कोई भी चीज़ निस्सारता से या अनस्तित्व से नहीं आती है। और न ही कोई चीज़ बिना कारण के या कारण पैदा करनेवाले के होती है। इसके उदाहरण अनगिनत हैं, जिनसे कोई अनदेखी नहीं कर सकता। पूरा ब्रह्माण्ड अपने सभी जीवित या निर्जीव, स्थिर और गतिशील चीज़ों के साथ अनस्तित्व के बाद अस्तित्व में आया है। अतः तर्क और विज्ञान दोनों इस बात की पुष्टि करते हैं कि कोई ऐसा अस्तित्व है जिसने ब्रह्मांड को बनाया है। चाहे उसका नाम अल्लाह हो या सृष्टा हो या सृजनहार हो या प्रारंभकर्ता (पहली बार पैदा करने वाला) हो। उसका इस वास्तविकता पर कोई प्रभाव नहीं है। क्योंकि पूरा ब्रह्मांड अपने अंदर विद्यमान चीजों के साथ सृष्टा के अस्तित्व पर पर्याप्त प्रमाण है।

इस सृष्टा के गुणों की पहचान उसके किए हुए कार्यों और बनाई हुई चीज़ों (रचनाओं) के अध्ययन और अनुवर्ती के माध्यम से होती है। उदाहरण के लिए, एक पुस्तक को ही ले लीजिए जो उसके लेखक के ज्ञान, उसके अनुभव, उसकी संस्कृति, उसकी शैली, उसकी सोच और उसके कार्य करने (उपलब्धि) और विश्लेषण करने की क्षमता का पता देती है। इसी तरह सारी बनाई हुई चीज़ें, निर्माता की विशेषताओं के बारे में एक व्यापक विचार और तस्वीर देती हैं। यदि लोग ब्रह्मांड और उसके अंदर उपस्थित प्राणियों और रचनाओं के साथ इसी वैज्ञानिक तर्क का उपयोग करें तो वे सृष्टा (निर्माता) की विशेषताओं की जानकारी तक पहुँच सकते हैं। समुद्र और प्रकृति की सुंदरता, कोशिकाओं की सटीकता और उनके विवरण की तत्वदर्शिता, ब्रह्मांड का संतुलन और उसकी आंदोलन प्रणाली, और वे सभी विज्ञान जहाँ तक मानव पहुँचा है, यह सब के सब सृष्टा की महानता, ज्ञान और बुद्धि का संकेत देते हैं।

चाहे लोग संसार को पैदा करने की हिकमत (तत्वदर्शिता) का पता चलाने में सहमत हों या वे इसका पता न लगा सकें, और चाहे वे जीवन में कठिनाइयों और दर्द के पाए जाने के पीछे कारण (तत्वदर्शिता) के विषय में सहमति बना सकें या सहमत न हों, परंतु यह उस परिणाम को कुछ भी नहीं बदल सकता जो वैज्ञानिक तर्क के द्वारा प्राप्त हुआ है, जो एक महान, सर्वज्ञानी और बुद्धिमान सृष्टा के अस्तित्व की पुष्टि करता है, जिसे विश्वासी लोग (मुसलमान) सर्वसहमति के साथ "अल्लाह" सर्वशक्तिमान की संज्ञा देते हैं।